रमज़ान का महीना और शबे क़द्र

इमादुल उलमा अल्लाम सै0 मुहम्मद रज़ी साहब

रोज़ा अगर किसी दिल और ज़मीर को पाक न कर सके तो वह सच्चा रोज़ा नहीं है। यानी वह रोज़े की सिर्फ़ एक शक्ल और सूरत है जिसमें रूह नहीं जो उसका अस्ल मक़सद नहीं है। इसीलिए कुरआने हक़ीम ने जहाँ रोज़े का हुक्म दिया है साथ ही ''ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो'' फरमाकर यह भी ज़ाहिर कर दिया कि इस्लामी रोज़ा सिर्फ़ फ़ाक़ा करने का नाम नहीं बल्कि इसमें परहेज़गारी और तक़्वे की रूह होती है। दूसरे लफ़्ज़ों में रोज़े का सबब यह होता है कि इन्सान इसकी वजह से अपने ज़मीर में एक ऐसी हालत पैदा कर सके जिसके बाद उसको गुनाहों से नफ़रत और नेकियों से मुहब्बत होने लगे। रोज़े में जहाँ और बड़े फ़ायदे हैं वहाँ एक बड़ा फ़ायदा यह भी है कि वह आपस में मुहब्बत और हमदर्दी को बेपनाह बढ़ा देता है और अगर यह बात नहीं है तो उसे पैदा कर देता है।

यह बात सब ही जानते हैं कि जब तक किसी पर ख़ुद मुसीबत और तकलीफ़ नहीं आती उस वक़्त तक उसे दूसरों की तकलीफ़ का एहसास नहीं होता इसीलिए जब कोई रोज़ा रखता है तो उसके दिल में उन भूखों का भी ख़्याल आ ही जाता है जो ज़िन्दगी की आसानियों से महरूम हैं और जो ग़रीबी और फ़ाक़े में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। इस तरह रोज़ा उस एहसास को जगाता है और दुखी इन्सानियत से हमदर्दी का शौक़ पैदा करता है। हज़रत सरवरे काएनात[स0] अपने एक मशहूर ख़ुत्बे में फ़रमाते हैंः यह महीना रहमतों और बरकतों का है। मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि वह ख़ासकर ग़रीबों और बेसहारों की मदद करें। बड़ों का अदब करें, छोटों पर मेहेरबानी की नज़र रखें, अपनी ज़बान को बुरी और बेकार बातों से महफ़ूज़ रखें, कानों और आँखों को गुनाह से बचाएं, यतीमों पर रहम करें और अपने गुनाहों से तौबा और इस्तेग़फार करें। इसके बाद इरशाद हुआः ''जो शख़्स किसी दूसरे मोमिन को रोज़ा इफ़तार कराता है ख़ुदा उसको एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब देता है। और उसके गुनाहों को माफ़ कर देता है।'' यह सुनकर सहाबियों[रज़ि0] ने फ़रमायाः हुज़ूर[स0]! हम बहुत से ऐसे ग़रीब और मुफ़लिस लोग हैं जो इतनी ताक़त नहीं रखते कि दूसरों के लिए इफ़तारी का इन्तिज़ाम कर सकें। आप[स0] ने फरमायाः ''अगर तुम रोज़ेदार को इफ़तार के लिए खजूर का एक टुकड़ा ही दे दो या पानी का एक घूँट ही पिला दो तब भी तुम्हें यही सवाब मिलेगा क्योंकि सवाब तो दिल की नियत और ख़ुलूस पर दिया जाता है।

रसूल[स0] का इरशाद है कि जो शख़्स इस महीने में लोगों के साथ हमदर्दी और बेहतरीन अख़लाक़ का बर्ताव करता है क़यामत के दिन उसके क़दम ''पुले सिरात'' पर नहीं डगमगाएंगे और वह आसानी के साथ उस पर से गुज़र जाएगा।

हक़ीक़त में पूरे साल यही एक ऐसा महीना है जिसमें इस्लामी तालीमात पर अमल करने और अमल सीखने का बेहतरीन मौक़ा मिलता है। रोज़े का असली मक़सद इन्सान का

जिस्मानी और रूहानी सुधार है। इसलिए हमें इस पाक और बरकत वाले महीने में दो बड़े रास्ते दिये गये हैं एक कुरआन करीम दूसरे यही रोज़ा। रोज़ा हमारी रूह को जगाता है, हमारे मुर्दा एहसास में नई ज़िन्दगी पैदा करता है और हमें इस क़ाबिल बना देता है कि हम कुरआन पाक की हिदायत से फ़ायदा उठा सकें, उसके नूर से अपने दिल व दिमाग़ और ज़मीर के अन्धेरों को मिटाकर अपनी ज़िन्दगी में ना ख़त्म होने वाली रौशनियाँ पैदा कर सकें, अपने किरदार को दीने मुहम्मदी[स०] के निज़ाम पर ढालने की कोशिश करें और अपने सोए हुए एहसासों को भाइचारगी और हमदर्दी और रहम व करम की उमंगों से भर सकें। रोज़ा रखने से इन्सान में जो सब्र व शुक्र और बर्दाश्त की ताक़त पैदा होती है वह ज़िन्दगी के हर मोड़ पर काम आती है। ग़रज़ रोज़ा सिखाता है– मुसीबतों पर सब्र करना, भूख और प्यास को बर्दाश्त करना और एक दूसरे के दुःख़–दर्द का एहसास। अमन व आराम की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले शहरी हों या जंग के मैदान के बहादुर सिपाही, रोज़ा हर मुसलमान को दूसरे की मुसीबत, भूख और प्यास की तकलीफ़ का एहसास दिलाता है और उसमें कुर्बानी और आपसी हमदर्दी की वह उमंग पैदा कर देता है जो किसी दूसरे रास्ते से मुमकिन नहीं हो सकती। वह पाकीज़गी की एक ऐसी हालत पैदा करता है जो रोज़ेदार के पूरे एहसास पर छा जाती है और सहर की शुरुआती रौशनी से लेकर शाम के अन्धेरे तक बन्दे और उसके अल्लाह में एक अजीब सा रिश्ता हो जाता है जो किसी और तरह मुमकिन नहीं होता।

बेशक रोज़े की यही ज़रूरत है कि हम अपने आपको गुनाहों से बचाएं। उस रोज़े में हरगिज़ इस्लामी रूह न होगी जिसमें गुनाहों से परहेज़ न हो, वह लोग बड़े बदक़िस्मत हैं जो इस मुक़द्दस महीने में उसकी बड़ी बरकतों से सिर्फ़ महरूम ही नहीं रहते बल्कि अपने ज़मीर को और ज़्यादा गिरावट और अन्धेरे में पहुँचा देते हैं। मिलावट करना, नाजाएज़ फ़ायदा लेना, झूठ बोलना, चोरी करना, दूसरों के साथ ज़बान या हाथ से तकलीफ़ देना, बुरे काम करना, धोखा देना और इसी तरह दूसरी बातें वैसे भी गुनाह हैं फिर रमज़ान के महीने में इन गुनाहों की सख़्ती और भी बढ़ जाती है। इस बिना पर हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह अपने ज़मीर को पाक रखे और इस पाक महीने की बुलन्दी और बुज़ुर्गी का पूरा ख़याल रखे।

ज़माने के इन्क़ेलाब हमारे लिए नसीहत का सामान लाते रहते हैं और कुछ दूर नहीं कि कभी हम भी दूसरों के लिए नसीहत बन जाएं इसलिए हमारा फ़र्ज़ है कि हम उस अल्लाह के गुस्से और क़हर से डरें जो हमारी बुराइयों को अच्छी तरह जानता है और उससे हमारी कोई बात छुपी नहीं रह सकती। आज की मुसीबतें और आफ़तें आख़िरी नहीं हैं वह कल भी आ सकती हैं। हज़रत अमीरुलमोमिनीन अली[अ०] इब्ने अबीतालिब[अ०] ने फ़रमाया हैः "अल्लाह से जंग न करो क्योंकि तुम न तो उसके गुस्से और क़हर का मुक़ाबला कर सकते हो और न उसकी रहमत से अलग रह सकते हो।" हज़रत अली[अ०] के इस इरशाद में कितनी गहराई पायी जाती है! बेशक कमज़ोर और बेबस इन्सान ख़ुदा से मुक़ाबला नहीं कर सकता और उसके लिए बस यही एक रास्ता है कि वह ख़ुदा के हर हुक्म के सामने सर झुका दे वह अगर अल्लाह को छोड़कर जाना चाहेगा तो उसकी ख़ुदाई से निकल कर किधर जाएगा!

हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह इस बरकत वाले महीने से फ़ायदा उठाए और

(बक़िया............पेज–12 पर)

चाहत। रोज़ा इन्हीं दो फितरतों को क़ाबू में लाने की प्रेक्टिस है। जैसे रमज़ान का महीना मुसलमानों के लिए एक सालाना ट्रेनिंग कैम्प (तरबियतगाह) है जहाँ क़ायदे क़ानून की तालीम व तरबियत का सामान तैयार किया जाता है। नीचे दी हुई आयत में इस हक़ीक़त की तरफ इशारा हैः–

''ऐ ईमान वालो! तुम पर भी रोज़े उसी तरह फ़र्ज़ किये गये जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गये थे ताकि तुम परहेज़गारी हासिल करो।''

अगर नमाज़ ज़ाहिरी बराबरी पैदा करती है तो रोज़ा अन्दुरूनी बराबरी की बुनियाद डालता है। इसकी बदौलत अमीर और खुशहाल लोगों को अपने ग़रीब और भूखे भाईयों की तकलीफ में शरीक होने का मौक़ा मिलता है। वह सुबह से शाम तक भूखे और प्यासे रहकर उस तकलीफ का एहसास कर लेते हैं जो फ़ाक़े की वजह से उनके ग़रीब भाईयों को सताती रहती है। और इस तरह हमदर्दी का शौक़ उनके दिल में मौज़ें मारता है और वह नीचता जो फ़ाक़ा करने वाले लोगों की तरफ से उनके दिल में बस गई थी वह दूर हो जाती है।

(बक़िया .... रमज़ान का महीना और शबे क़द्र)

खुदा के सामने अपने आमाल को सही करे। इस मसले में वह जितना अल्लाह की रहमत से फ़ाएदा उठा सकता है दूसरे ज़माने में नहीं उठा सकता। इस अज़ीम महीने की एक बड़ी ख़ास बात यह है कि इसमें शबे क़द्र भी है। यह वह मुबारक रात है जिसमें कुरआन करीम नाज़िल हुआ और रसूले अकरम[स०] के ज़रिये से सारी इन्सानियत को वह इलाही क़ानून हासिल हुआ जो क़यामत तक के लिए आख़िरी है। (यानी इसके बाद अब कोई नयी शरीयत या क़ानून नहीं आने वाला है) अल्लाह ने शबे क़द्र को ऐसे एक हज़ार महीनों से अफ़ज़ल और बेहतर क़रार दिया है जिसमें कोई शबे क़द्र मौजूद न हो। इस बात में बहुत से क़ौल है कि शबे क़द्र कौन सी रात है? और किस महीने की रात है? मगर ज़्यादा तर मुहद्दिसीन और मुफ़स्सिरीन का यही कहना है कि यह मुबारक रात रमज़ान ही में है और खुदा के इस इरशाद से भी इसकी ताईद होती है कि कुरआन को रमज़ान में नाज़िल किया गया हैः–

''वह रमज़ान का महीना है जिसमें कुरआन नाज़िल किया गया।'' (बक़रः–105)

दूसरी जगह यह भी फ़रमाया गया है किः–

''हम ने उस (कुरआन) को शबे क़द्र में उतारा है।'' (क़द्र–1)

यानी हमने कुरआन को शबे क़द्र में नाज़िल किया है। जब इन दोनों आयतों के मतलब को मिलाकर देखा जाता है तो यह बात साफ तरीक़े पर समझ में आती जाती है कि शबे क़द्र रमज़ान ही में है।

इस मसअले में भी कई क़ौल हैं कि शबे क़द्र रमज़ान की किस रात का नाम है मगर ज़्यादातर लोग इसी नज़रिये के क़ायल हैं कि यह रात रमज़ान के आख़िरी दस दिनों में है और यह इकाई की रात है यानी इक्कीसवीं, तेईस्वीं, पच्चीसवीं, सत्ताईस्वीं या उन्तीस्वीं रातों में से ही कोई रात है।

मुख़्तसर ये कि असली शबे क़द्र को इन रातों में छिपा दिया गया है ताकि लोग इस रात की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत और सवाब को हासिल करने के लिए हर रात में इबादत करते रहें और ज़्यादा से ज़्यादा सवाब हासिल करें। एक हदीस में सरवरे दो आलम[स०] ने फरमायाः ''जो शख़्स शबे क़द्र में ईमानदारी और सच्ची नीयत के साथ खुदा की इबादत करता है उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। मगर इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि लोग इत्मिनान से गुनाह करते रहें और यह समझ लें कि जब शब्र क़द्र आएगी तो सब गुनाह माफ़ करा लेंगे। हक़ीक़त में गुनाह सिर्फ़ उन लोगों के माफ़ किये जाएंगे जो अपने गुनाहों पर दिल से अफ़सोस करे और शर्मिन्दा हों और यह तय कर लें कि आईन्दा कोई गुनाह न करेंगे। अल्लाह हम सब मुसलमानों को इस अज़ीम रात की बरकतों से फ़ाएदा उठाने की तौफ़ीक़ अता करे और हमें अपने सच्चे बन्दों में शुमार कर ले। ◆◆◆